लोकप्रियसाहित्यमाला - ८६

# वैशाली

( उपन्यासः )

प्रधानसम्पादकः

आचार्यश्रीपरमेश्वरनारायणशास्त्री

कुलपतिः

प्रणेता

डॉ. महेशचन्द्रशर्मा गौतमः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

( भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम् )

नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यमाला - 86

# वैशाली

## ( उपन्यासः )

प्रधानसम्पादकः
आचार्यश्रीपरमेश्वरनारायणशास्त्री
कुलपतिः

प्रणेता
डॉ. महेशचन्द्रशर्मा गौतमः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
( भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम् )
नवदेहली

# विषयानुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| १. | अथ प्रथम उच्छ्वासः | १-८३ |
| २. | अथ द्वितीय उच्छ्वासः | ८४-१२२ |
| ३. | अथ तृतीय उच्छ्वासः | १२३-१६८ |
| ४. | अथ चतुर्थ उच्छ्वासः | १६९-२३० |
| ५. | अथ पञ्चम उच्छ्वासः | २३१-२८२ |
| ६. | अथ षष्ठ उच्छ्वासः | २८३-३२५ |
| ७. | अथ सप्तम उच्छ्वासः | ३२६-३७३ |
| ८. | अथ अष्टम उच्छ्वासः | ३७४-४१३ |
| ९. | अथ नवम उच्छ्वासः | ४१४-४६८ |
| १०. | अथ दशम उच्छ्वासः | ४६९-५०१ |
| ११. | अथ एकादश उच्छ्वासः | ५०२-५२२ |

**झङ्कृतमिव तस्या वचनं श्रुत्वा मन्त्रमुग्ध इव 'धन्यवादः' इत्युक्त्वा यथानिर्देशम् उपाविक्षत्।**

**"सावित्र्या भूमिकायां भवत्या अभिनयो निकामं स्वाभाविक आसीत्। एवं प्रत्यैयत यथा भवती यथार्थतः सावित्र्या जीवनं प्राणयत।" एवमाशुतोषो वार्तालापं समारब्धवान्।**

**"अभिनयकाले कर्ता आत्मानं विस्मरति। न केवलं वेशभूषया भावनयापि भावनीयेन सह तादात्म्येनैव सशक्तोऽभिनयः सम्भवति। नैवं चेत् कथम्पुनरभिनये सजीवता साधयितुं शक्यते?" वैशाली उदतारीत्।**

**टिप्पणी :** प्रार्तथत - प्रार्थना की (प्र+√अर्थ उपयाच्ञायाम् लुङ् प्र.पु.ए.व.), विपञ्चिका - वीणा, उपाविक्षत् - बैठ गया (उप +√विश लुङ् प्र.पु.ए.व.), निकामम् - अत्यधिक, प्राणयत - जी रही थी, भावनीयः - वेशभूषा और भाव आदि से जिसके चरित्र का अभिनय किया जा रहा हो वह पात्र, तादात्म्यम् - अभिनेता का भावना के स्तर पर चरित्र के साथ एकरूप हो जाना।

**सरलार्थ :** "प्रशंसा के लिए धन्यवाद" कहते हुए वैशाली ने उसे सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने के लिए प्रार्थना की। और आशुतोष वीणा की तारों की झंकार के समान उसके वचनों को सुनकर मन्त्रमुग्ध के समान "धन्यवाद" कहकर निर्देश के अनुसार बैठ गया।

"सावित्री की भूमिका में आपका अभिनय अत्यधिक स्वाभाविक था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे आप सचमुच सावित्री का जीवन जी रही थी।" इस प्रकार आशुतोष ने वार्तालाप आरम्भ किया।

"अभिनय के समय कर्ता स्वयं को भूल जाता है। केवल वेशभूषा से ही नहीं भावना के स्तर पर भी वेशभूषा और भाव आदि से जिसके चरित्र का अभिनय किया जा रहा हो उस पात्र के साथ तादात्म्य से ही सशक्त अभिनय सम्भव हो सकता है। यदि ऐसा न हो तो भला अभिनय में सजीवता कैसे लाई जा सकती है?" वैशाली ने उत्तर दिया।

**"नाटकस्य प्रस्तुतौ अत्रभवत्या अदृष्टपूर्वस्यात्युत्कृष्टस्यानुष्ठानस्य संस्तवाय किं मह्यमात्मना सह चायपानस्य सौभाग्यं प्रदास्यति देवी ? न**

### लेखक:

नाम – डॉ. महेशचन्द्र शर्मा गौतम (प्रचलित नाम – डॉ. महेश गौतम)
(पंजाब सरकार द्वारा शिरोमणि-संस्कृतसाहित्यकार सम्मान से अलंकृत)

जन्मतिथि – 24.12.1949

पिता, माता – श्री बलदेवकृष्णशर्मा (स्व.), श्रीमती कृष्णा देवी (स्व.)

स्थायी निवास – गौतम मार्किट, सनौरी गेट, पटियाला

### अन्य रचनाएँ

1. पंजाब का संस्कृत काव्य को योगदान, निर्मल पब्लिकेशन्स् दिल्ली (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित), 2. मूकं निमन्त्रणम् (संस्कृत कविता संकलन) डीसेन्ट पब्लिशर्स दिल्ली, 3. ऋग्वेद (दशममण्डल) हिन्दीभाष्य (दो खण्ड) भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ, 4. अरुणा (संस्कृत भाषा में रचित उपन्यास) हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला, 5. संस्कृत कावि विच सिक्ख गुरु साहिबान दी महिमा (पंजाबी अनुवाद – श्री रूपिन्दर सिंह) गुरुनानकदेव मिशन पटियाला, 6. श्री गुरु नानक देव चरित (चरित काव्य), निर्मल पब्लिकेशन्स् दिल्ली (सिख अकादमी पटियाला के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित), 7. ऐसे जिया जाता है (कविता संकलन) निर्मल पब्लिकेशन्स् दिल्ली, 8. स्वातन्त्र्य समर (हिन्दी में रचित महाकाव्य) राइटर्स च्वायस नई दिल्ली (इण्डियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च नई दिल्ली के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित एवं भाषा विभाग पंजाब द्वारा सर्वोत्तम काव्य पुस्तक के रूप में पुरस्कृत, 9. अधूरा आदमी (उपन्यास) निर्मल पब्लिकेशन्स् दिल्ली, 10. मेघदूतम् (कालिदास) (पंजाबी व्याख्या) संगम पब्लिकेशन्ज़, समाना, 11. सिंहनादः (डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज द्वारा रचित खण्डकाव्य की हिंदी और पंजाबी में व्याख्या) पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटि, पटियाला, 12. बिखरते रिश्ते (हिंदी उपन्यास) अप्रकाशित।